NEWS CLIPPING:19.11.2022

PUNJAB KESARI

भारत को अपनी पुरानी संस्कृति और शिक्षा को अपनाना होगा : प्रो. केसी शर्मा

- भारतीय शिक्षा नीति 2020 पर व्याख्यान सत्र का आयोजन
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा प्रणाली के भारतीयकरण की दिशा में ठोस प्रयास : कुलपति प्रो. एसके तोमर

फरीदाबाद,18 नवम्बर (पूजा शर्मा): जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ वाइस चांसलर एंड एकेडेमिशियंस (एआईएवीसीए), नई दिल्ली के सहयोग से गौरवशाली भारतीय शिक्षा नीति 2020 पर व्याख्यान सत्र का आयोजन किया।

व्याख्यान सत्र का संचालन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूशन इनोवेशन सेल (आईआईसी) द्वारा किया गया।

व्याख्यान का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ करते हुए हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष कैलाश चंद शर्मा साथ में कुलपति प्रो सुशील कुमार तोमर। *(छाया: एस शर्मा)*

हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष प्रो. केसी शर्मा सत्र के मुख्य वक्ता रहे जबकि हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की प्रो-कुलपति प्रो. सुषमा यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। सत्र की अध्यक्षता जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के पूर्व कुलपति प्रो. लोकेश शेखावत ने की। इस मौके पर एआईएवीसीए के महासचिव डॉ. रणदीप सिंह, पूर्व प्राचार्य भगवती राजपूत और डीएवी कॉलेज की प्राचार्या डॉ. सविता भगत भी मौजूद रहीं। सत्र की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई जिसके बाद माँ सरस्वती की वंदना और विश्वविद्यालय कुलगीत का गायन हुआ। कुलपति प्रो. सुशील कुमार तोमर, जो एआईएवीसीए के उपाध्यक्ष भी हैं, ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने संगोष्ठी के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर बोलते हुए प्रो. तोमर ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 देश की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के भारतीयकरण की दिशा में एक ठोस कदम है और विश्वविद्यालय एनईपी-2020 को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सभी प्रयास कर रहा है।

एआईएवीसीए के अध्यक्ष प्रो. लोकेश शेखावत ने संस्था के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। उन्होंने मुख्य वक्ताओं के कथनों को आगे बढ़ते हुए कहा कि भारत योद्धाओं का देश है। इसलिए, जब तक हम सब एक साथ लक्ष्य की ओर केंद्रित रहेंगे, तब तक सभी बाधाओं से आसानी से निपटा जा सकता है।

पुरानी संस्कृति व शिक्षा को अपनाना होगा

अपने संबोधन में मुख्य वक्ता प्रो. शर्मा ने कहा कि भारत को अपनी पुरानी संस्कृति और शिक्षा को अपनाना होगा। नई शिक्षा नीति उसी पर आधारित है, हालांकि इसमें और सुधार की गुंजाइश है। उन्होंने शुरूआती और वर्तमान में लागू की गई शिक्षा नीति और खामियों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से भारत ने एक बार 1968 में और फिर 1986 में शिक्षा नीतियां लागू कीं। उपनिवेशवाद की अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का प्रारंभिक प्रयासों वैदिक धर्म पर आधारित एक सभ्य राज्य को एक गुलाम मानसिकता वाले राज्य, यानी काले अंग्रेजों में बदलना था। सभी बिंदुओं पर विचार करते हुए शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2.5 लाख से अधिक सुझावों को स्वीकार किया गया था। यह नीति उन लोगों की पहचान करने में मदद करेगी जो पूरी पढ़ाई जारी रखने में असमर्थ है।

NEWS CLIPPING:19.11.2022

HADOTI ADHIKAR

पुरानी संस्कृति और शिक्षा को होगा अपनाना : प्रो. शर्मा

गौरवशाली भारतीय शिक्षा नीति, 2020 पर व्याख्यान सत्र का आयोजन

हाड़ौती अधिकार

फरीदाबाद, 18 नवम्बर। जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, वाईएमसीए ने ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ वाइस चांसलर एंड एकेडेमिशियंस (एआईएवीसीए), नई दिल्ली के सहयोग से 'गौरवशाली भारतीय शिक्षा नीति 2020' पर व्याख्यान सत्र का आयोजन किया।

व्याख्यान सत्र का संचालन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूशन इनोवेशन सेल (आईआईसी) द्वारा किया गया। हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष प्रो. के.सी. शर्मा सत्र के मुख्य वक्ता रहे जबकि हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की प्रो-कुलपति प्रो. सुषमा यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। सत्र की अध्यक्षता जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के पूर्व कुलपति प्रो. लोकेश शेखावत ने की।

इस मौके पर एआईएवीसीए के महासचिव डॉ. रणदीप सिंह, पूर्व प्राचार्य भगवती राजपूत और डीएवी कॉलेज की प्राचार्या डॉ. सविता भगत भी मौजूद रहीं। कुलपति प्रो सुशील कुमार तोमर, जो एआईएवीसीए के उपाध्यक्ष भी हैं, ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने संगोष्ठी के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर बोलते हुए प्रो. तोमर ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 देश की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के भारतीयकरण की दिशा में एक ठोस कदम है और विश्वविद्यालय एनईपी-2020 को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सभी प्रयास कर रहा है।

अपने संबोधन में मुख्य वक्ता प्रो. शर्मा ने कहा कि भारत को अपनी पुरानी संस्कृति और शिक्षा को अपनाना होगा। नई शिक्षा नीति उसी पर आधारित है, हालांकि इसमें और सुधार की गुंजाइश है। उन्होंने शुरूआती और वर्तमान में लागू की गई शिक्षा नीति और खामियों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से भारत ने एक बार 1968 में और फिर 1986 में शिक्षा नीतियां लागू कीं। उपनिवेशवाद की अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का प्रारंभिक प्रयासों वैदिक धर्म पर आधारित एक सभ्य राज्य को एक गुलाम मानसिकता वाले राज्य, यानी काले अंग्रेजों में बदलना था। सभी बिंदुओं पर विचार करते हुए शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2.5 लाख से अधिक सुझावों को स्वीकार किया गया था। यह नीति उन लोगों की पहचान करने में मदद करेगी जो पूरी पढ़ाई जारी रखने में असमर्थ है। यह समकालीन और पारंपरिक अध्ययन का एक अच्छा सममिश्रण है। ये सभी भारत को विश्वगुरु के स्तर पर ले जाने में योगदान दे रहे हैं।

NEWS CLIPPING:19.11.2022

AAJ SAMAJ

कार्यक्रम **गौरवशाली भारतीय शिक्षा नीति, 2020 पर व्याख्यान सत्र का किया आयोजन**

भारत को अपनी पुरानी संस्कृति व शिक्षा को अपनाना होगा: केसी शर्मा

आज समाज नेटवर्क

फरीदाबाद। जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ वाइस चांसलर एंड एकेडेमिशियंस (एआईएवीसीए), नई दिल्ली के सहयोग से गौरवशाली भारतीय शिक्षा नीति 2020 पर व्याख्यान सत्र का आयोजन किया। व्याख्यान सत्र का संचालन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूशन इनोवेशन सेल (आईआईसी) द्वारा किया गया। हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष प्रो. के.सी. शर्मा सत्र के मुख्य वक्ता रहे जबकि हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की प्रो-कुलपति प्रो. सुषमा यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। सत्र की अध्यक्षता जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के पूर्व कुलपति प्रो. लोकेश शेखावत ने की। इस मौके पर एआईएवीसीए के महासचिव डॉ. रणदीप सिंह, पूर्व प्राचार्य भगवती राजपूत और डीएवी कॉलेज की प्राचार्या डॉ. सविता भगत भी मौजूद रहीं। सत्र की शुरूआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई

व्याख्यान के समापन पर लिया गया सामूहिक चित्र।

जिसके बाद मां सरस्वती की वंदना और विश्वविद्यालय कुलगीत का गायन हुआ। कुलपति प्रो सुशील कुमार तोमर, जो एआईएवीसीए के उपाध्यक्ष भी हैं, ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने संगोष्ठी के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर बोलते हुए प्रो. तोमर ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 देश की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के भारतीयकरण की दिशा में एक ठोस कदम है और विश्वविद्यालय एनईपी-2020 को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सभी प्रयास कर रहा है।

अपने संबोधन में मुख्य वक्ता प्रो. शर्मा ने कहा कि भारत को अपनी पुरानी संस्कृति और शिक्षा को अपनाना होगा। नई शिक्षा नीति उसी पर आधारित है, हालांकि इसमें और सुधार की गुंजाइश है। उन्होंने शुरूआती और वर्तमान में लागू की गई शिक्षा नीति और खामियों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से भारत ने एक बार 1968 में और फिर 1986 में शिक्षा नीतियां लागू कीं। उपनिवेशवाद की अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का प्रारंभिक प्रयासों वैदिक धर्म पर आधारित एक सभ्य राज्य को एक गुलाम मानसिकता वाले राज्य, यानी काले अंग्रेजों में बदलना था। सभी बिंदुओं पर विचार करते हुए शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2.5 लाख से अधिक सुझावों को स्वीकार किया गया था।

NEWS CLIPPING:19.11.2022

HINDUSTAN

'नई शिक्षा प्रणाली से देश को लाभ होगा'

व्याख्यान

फरीदाबाद, कार्यालय संवाददाता। जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, वाईएमसीए में ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ वाइस चांसलर एंड एकेडेमिशियंस (एआईएवीसीए) नई दिल्ली के सहयोग से शुक्रवार को गौरवशाली भारतीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर व्याख्यान सत्र का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप जलाकरकी गई। इसके बाद छात्राओं ने मां सरस्वती की वंदना की। विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूशन इनोवेशन सेल (आईआईसी) की ओर से हुए कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष प्रो. केसी शर्मा पहुंचे।

फरीदाबाद स्थित बोस यूनिवर्सिटी में शुक्रवार को व्याख्यान सत्र का शुभारंभ करते हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष कैलाश चंद शर्मा। ● हिन्दुस्तान

वहीं मुख्य अतिथि हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की प्रो-कुलपति प्रो. सुषमा यादव शामिल रहीं। मुख्य वक्ता ने कहा कि भारत को अपनी पुरानी संस्कृति और शिक्षा को अपनाना होगा। नई शिक्षा नीति उसी पर आधारित है। संस्थान के कुलपति प्रो. सुशील कुमार तोमर ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश की शिक्षा प्रणाली के भारतीयकरण की दिशा में एक ठोस कदम है।

NEWS CLIPPING:19.11.2022

PIONEER

पुरानी संस्कृति और शिक्षा को अपनाना होगा: प्रो. शर्मा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा प्रणाली के भारतीयकरण की दिशा में ठोस प्रयास : कुलपति

गौरवशाली भारतीय शिक्षा नीति, 2020 पर व्याख्यान सत्र का आयोजन

पायनियर सामचार सेवा । फरीदाबाद

जेसी बोस विश्व विद्यालय में अयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते प्रो. केसी शर्मा।

जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ वाइस चांसलर एंड एकेडेमिशियंस (एआईएवीसीए), नई दिल्ली के सहयोग से गौरवशाली भारतीय शिक्षा नीति 2020 पर व्याख्यान सत्र का आयोजन किया। व्याख्यान सत्र का संचालन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूशन इनोवेशन सेल (आईआईसी) द्वारा किया गया। हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष प्रो. केसी शर्मा सत्र के मुख्य वक्ता रहे जबकि हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की प्रो-कुलपति प्रो. सुषमा यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। सत्र की अध्यक्षता जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के पूर्व कुलपति प्रो. लोकेश शेखावत ने की। मौके पर एआईएवीसीए के महासचिव डॉ. रणदीप सिंह, पूर्व प्राचार्य भगवती राजपूत और डीएवी कॉलेज की प्राचार्य डॉ. सविता भगत भी मौजूद रहीं। सत्र की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई जिसके बाद मां सरस्वती की वंदना और विश्वविद्यालय कुलगीत का गायन हुआ। कुलपति प्रो सुशील कुमार तोमर, जो एआईएवीसीए के उपाध्यक्ष भी हैं, ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने संगोष्ठी के बारे में जानकारी दी। प्रो. तोमर ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 देश की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के भारतीयकरण की दिशा में एक ठोस कदम है और विश्वविद्यालय एनईपी-2020 को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सभी प्रयास कर रहा है। अपने संबोधन में मुख्य वक्ता प्रो. शर्मा ने कहा कि भारत को अपनी पुरानी संस्कृति और शिक्षा को अपनाना होगा। नई शिक्षा नीति उसी पर आधारित है, हालांकि इसमें और सुधार की गुंजाइश है। उन्होंने शुरुआती और वर्तमान में लागू की गई शिक्षा नीति और खामियों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से भारत ने एक बार 1968 में और फिर 1986 में शिक्षा नीतियां लागू कीं। उपनिवेशवाद की अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का प्रारंभिक प्रयासों वैदिक धर्म पर आधारित एक सभ्य राज्य को एक गुलाम मानसिकता वाले राज्य, यानी काले अंग्रेजों में बदलना था। सभी बिंदुओं पर विचार करते हुए शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2.5 लाख से अधिक सुझावों को स्वीकार किया गया था।

NEWS CLIPPING:19.11.2022

REPCO NEWS

भारत को अपनी पुरानी संस्कृति और शिक्षा को अपनाना होगा- प्रो. के. सी. शर्मा

फरीदाबाद, 17 नवम्बर (रैपको न्यूज़)। जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ वाइस चांसलर एंड एकेडेमिशियंस (एआईएवीसीए), नई दिल्ली के सहयोग से गौरवशाली भारतीय शिक्षा नीति 2020 पर व्याख्यान सत्र का आयोजन किया।

व्याख्यान सत्र का संचालन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूशन

इनोवेशन सेल (आईआईसी) द्वारा किया गया। हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष प्रो. के.सी. शर्मा सत्र के मुख्य वक्ता रहे जबकि हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय की प्रो-कुलपति प्रो. सुषमा यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। सत्र की अध्यक्षता जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के पूर्व कुलपति प्रो. लोकेश शेखावत ने की।इस मौके पर एआईएवीसीए के महासचिव डॉ. रणदीप सिंह, पूर्व प्राचार्य भगवती राजपूत और डीएवी कॉलेज की प्राचार्या डॉ. सविता भगत भी मौजूद रहीं। सत्र की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई जिसके बाद माँ सरस्वती की वंदना और विश्वविद्यालय कुलगीत का गायन हुआ।

कुलपति प्रो सुशील कुमार तोमर, जो एआईएवीसीए के उपाध्यक्ष भी हैं, ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने संगोष्ठी के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर बोलते हुए प्रो. तोमर ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 देश की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली के भारतीयकरण की दिशा में एक ठोस कदम है और विश्वविद्यालय एनईपी-2020 को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सभी प्रयास कर रहा है।

अपने संबोधन में मुख्य वक्ता प्रो. शर्मा ने कहा कि भारत को अपनी पुरानी संस्कृति और शिक्षा को अपनाना होगा। नई शिक्षा नीति उसी पर आधारित है, हालांकि इसमें और सुधार की गुंजाइश है। उन्होंने शुरूआती और वर्तमान में लागू की गई शिक्षा नीति और खामियों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से भारत ने एक बार 1968 में और फिर 1986 में शिक्षा नीतियां लागू कीं। उपनिवेशवाद की अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का प्रारंभिक प्रयासों वैदिक धर्म पर आधारित एक सभ्य राज्य को एक गुलाम मानसिकता वाले राज्य, यानी काले अंग्रेजों में बदलना था।

सभी बिंदुओं पर विचार करते हुए शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2.5 लाख से अधिक सुझावों को स्वीकार किया गया था। यह नीति उन लोगों की पहचान करने में मदद करेगी जो पूरी पढ़ाई जारी रखने में असमर्थ है। यह समकालीन और पारंपरिक अध्ययन का एक अच्छा सममिश्रण है। ये सभी भारत को विश्वगुरु के स्तर पर ले जाने में योगदान दे रहे हैं।